8

# निपुण भारत मिशन संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

आरती मौर्या*
अंजलि बाजपेयी**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में सन 2030 तक 100 प्रतिशत साक्षरता दर हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। इतने बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य है। एन.ई.पी. 2020 जोर देते हुए कहता है कि देश "सीखने के संकट" से गुजर रहा है। लगभग 5 करोड़ विद्यार्थी मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान कौशलों से वंचित हैं अर्थात वे समझ के साथ पढ़ने, लिखने तथा मूलभूत गणितीय प्रश्नों को हल करने में सक्षम नहीं हैं। अतः आधार की मजबूती के लिए पूर्व–प्राथमिक स्तर से ही मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान (एफ.एल.एन.) कौशलों का विकास करने के लिए एक राष्ट्रीय मिशन की तत्काल आवश्यकता महसूस की गई। निपुण भारत मिशन इसी आवश्यकता का परिणाम है। वास्तव में निपुण भारत मिशन 'समग्र शिक्षा' का ही एक भाग है, जो वर्ष 2026–2027 तक 3 से 9 वर्ष के बच्चों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान प्राप्त करने हेतु मिशन मोड में कार्य करेगा। प्रस्तुत अध्ययन निपुण भारत मिशन के प्रावधानों में निहित संभावनाओं व चुनौतियों का एक आंशिक आकलन प्रस्तुत करता है।

*"नींव मजबूत हो तो समुद्र पर बना पुल भी टिका रह जाता है,*
*और नींव कमजोर हो तो जमीन पर बना आलीशान महल भी गिर जाता है।"*

अर्थात किसी इमारत की मजबूती उसके आधार से ही तय की जाती है। इसी प्रकार विद्यार्थी जीवन में शुरुआती कक्षाओं का प्रभाव उनके आगामी जीवन तथा भविष्य के अधिगम–अनुभवों पर पड़ता है। आधारभूत शिक्षण बच्चे के भावी शिक्षण अधिगम की नींव तैयार करता है। समझ के साथ पढ़ना, लिखना और मूलभूत गणितीय प्रश्नों को हल करने के बुनियादी कौशलों को प्राप्त कर लेने पर बच्चा कक्षा 3 के बाद की पाठ्यचर्या जटिलताओं के लिए तैयार हो जाता है। बच्चे का लगभग 85 प्रतिशत मानसिक विकास प्रारंभिक बाल्यावस्था में ही हो जाता है (रा.शै.अ.प्र.प.)। इस लिहाज से बाल जीवन

* *एम.एड. छात्रा,* शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
** *प्रोफेसर,* शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अतिसंवेदनशील अवस्था होती है। यही कारण है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था के इन वर्षों में बच्चे की सृजनात्मकता और समस्या के समाधान से संबंधित आंतरिक क्षमताओं को न केवल आसानी से विकसित किया जा सकता है, अपितु आयु के अनुकूल शैक्षिक मनोरंजक और विविध गतिविधियों के माध्यम से इन क्षमताओं को एक सीमा तक बढ़ाया भी जा सकता है।

शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 'असर' द्वारा भारत के विभिन्न जिलों में किए गए सर्वेक्षण से बुनियादी स्तर पर शिक्षा की चिंताजनक स्थिति का पता चलता है। 2005 में आयी 'असर' की रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण भारत के पाँचवी कक्षा के करीब आधे बच्चे कक्षा 2 के स्तर का पाठ नहीं पढ़ पाते थे। 'असर' रिपोर्ट 2018 के अनुसार कक्षा 5 के केवल 50.5 प्रतिशत छात्र कक्षा 2 की किताब पढ़ पाते थे तथा कक्षा 8 के 27 प्रतिशत छात्र कक्षा 2 के पाठ पढ़ने में अक्षम पाए गए। कक्षा 1 के 90 प्रतिशत छात्र हिंदी अक्षर नहीं पढ़ सकते, कक्षा 3 के 46 प्रतिशत बच्चे 99 तक की गिनती नहीं पढ़ पाते तथा 41.9 प्रतिशत बच्चे अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ हैं (असर, 2019)। ये आँकड़े बच्चों के पढ़ने और गणित हल करने की क्षमता की चिंताजनक स्थिति की एक झलक दे रहे हैं। रही सही कसर कोविड महामारी ने पूरी कर दी। देश भर में कोविड–19 के मद्देनजर स्कूल बंद होने के कारण लगभग 20 प्रतिशत ग्रामीण बच्चों को कोई पाठ्यपुस्तक उपलब्ध नहीं कराई जा सकी। अतः हम देखते हैं कि भारत में करोड़ों बच्चे ऐसे हैं जो मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक (एफ.एल.एन.) की कमी के चलते लगातार पिछड़ते चले जाते हैं और अंततः पढ़ाई को अरुचिपूर्ण समझकर छोड़ देते हैं। सीखने के इसी संकट को देखते हुए सभी बच्चों के लिए एफ.एल.एन. को बनाए रखना एक राष्ट्रीय मिशन बनाया गया है जिसके एवज में निपुण भारत मिशन का प्रादुर्भाव हुआ है।

## अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज देश में सीखने का संकट उत्पन्न हो गया है, कक्षा 3 में पढ़ने वाले लगभग 73 प्रतिशत बच्चे एफ.एल.एन. की कमी से जूझ रहे हैं। बच्चे अपनी कक्षा की विषयवस्तु तो क्या अपने से निचले दर्जे की कक्षाओं का भी पाठ पढ़ने में सक्षम नहीं हैं। हालाँकि, भारत की शिक्षा व्यवस्था में ऐसी कई बातें हैं, जिनपर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है, लेकिन इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है, प्रारंभिक शिक्षा पर समय रहते उचित ध्यान देना।

प्रस्तुत अध्ययन निपुण भारत मिशन की उपयोगिता का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। अध्ययन के लिए उपरोक्त समस्या का चयन इस आधार पर उचित है कि कई समितियों और आयोगों की नियुक्ति हुई, और कई शैक्षिक नीतियों की घोषणा हुई। इसके बावजूद भारत में बुनियादी शिक्षा की समस्या जस की तस बनी रही, इसलिए यह नया मिशन किस सीमा तक वास्तविकताओं से संबंध रखता है, कितनी संभावनाओं को समेटे हुए है तथा क्या चुनौतियाँ होंगी इत्यादि, विषयों पर प्रकाश डालने के लिए यह अध्ययन एक सूक्ष्म प्रयास है।

## अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य निपुण भारत मिशन का विश्लेषण करके उसमें निहित संभावनाओं व चुनौतियों पर प्रकाश डालना है।

## अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में दस्तावेज विश्लेषण विधि का प्रयोग किया है। पूर्वचयनित विशेषज्ञों की सलाह से कुल 12 थीम्स/विषयों का चयन किया गया है, जिनके अंतर्गत मिशन के दस्तावेज का विश्लेषण किया गया।

## समग्र तथा न्यायदर्श

यह अध्ययन दस्तावेज के मूल्यांकन से संबंधित है, अतः निपुण भारत का दस्तावेज ही प्रस्तुत अध्ययन के लिए समग्र व न्यायदर्श है।

## अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को ध्यान में रखकर किया गया है।

## मिशन का संक्षिप्त परिचय

भारत सरकार ने मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान बढ़ाने के लिए निपुण भारत मिशन (नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी) की शुरुआत की है। इस मिशन के तहत भारत सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2026–2027 तक पूरे देश में कक्षा तीन तक के सभी बच्चे एफ.एल.एन. को प्राप्त कर लें। यह मिशन 3 से 9 वर्ष (प्री–स्कूल से कक्षा 3) के बच्चों को शामिल करता है। कक्षा 3 तक के ही बच्चों को मिशन में शामिल करने के पीछे कारण है कि यह समय एक नतिपरिवर्तन बिंदु (Inflection point) माना जाता है। वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट (2018) के अनुसार, कक्षा 3 तक बच्चे "पढ़ना सीखते" (Learn to read) हैं, जबकि कक्षा 3 के बाद उनसे उम्मीद की जाती है कि वे 'सीखने के लिए पढ़ेंगे' (Read to learn)। यदि इस स्तर तक बच्चे पढ़ना सीख गए तो वे आगे की कक्षाओं में निर्बाध बढ़ते चले जाते हैं, परंतु यदि इस अवस्था तक वे पढ़ने तथा गणित हल करने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त नहीं कर पाते हैं तो लगातार आगे की कक्षाओं में पिछड़ते चले जाते हैं।

## मिशन का उद्देश्य

निपुण भारत मिशन का उद्देश्य एक सक्षम परिवेश का निर्माण करना है ताकि मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान के सार्वभौमिक अर्जन को सुनिश्चित किया जा सके जिससे प्रत्येक बच्चा कक्षा 3 के बाद पठन, लेखन और संख्याज्ञान के कौशल की अपेक्षित शिक्षण क्षमताओं को प्राप्त कर ले।

## मिशन का थीम वाक्य

"निपुण भारत का सपना,
सब बच्चे समझे भाषा और गणना।"

## मिशन के अंतर्गत विद्यार्थियों के समग्र विकास के प्रमुख लक्ष्य

निपुण भारत मिशन में विद्यार्थियों का अधिगम समग्र, एकीकृत, समावेशी और आनंदमय बनाने का प्रयास किया गया है। बच्चे के संपूर्ण विकास के लिए तीन लक्ष्यों को निर्धारित किया गया है—

**विकासात्मक लक्ष्य 1**— बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और स्वच्छता बनाए रखें।

**विकासात्मक लक्ष्य 2**— बच्चों का संप्रेषण प्रभावी हो।

**विकासात्मक लक्ष्य 3**— बच्चे काम से जुड़े रहने वाले शिक्षार्थी बनें और अपने निकटतम परिवेश से जुड़ें।

## मिशन कार्यान्वयन ढाँचा

एफ.एल.एन. मिशन शिक्षा मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य, जिला, ब्लॉक व स्कूल स्तर पर एक 5 स्तरीय कार्यान्वयन ढाँचे की व्यवस्था की जाएगी।

एन.ई.पी. 2020 में भी एफ.एल.एन. की प्राप्ति को आज की सबसे बड़ी जरूरत माना गया है। यह मिशन इस संबंध में सही दिशा प्रदान करता है। 21वीं सदी की राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव के लिए लाई गई है। निपुण भारत मिशन इस परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हो सकता है।

## परिणाम

दस्तावेज का कुल निर्धारित 12 थीम्स/विषयों के अनुसार विश्लेषण करने पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए—

- 332 पृष्ठों वाला निपुण भारत मिशन का दस्तावेज, बालवाटिका से लेकर कक्षा तीन तक के बच्चों की मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान कौशलों के विकास के लिए एक बेहद विस्तृत ब्लूप्रिंट प्रदान करता है।
- दस्तावेज में बालवाटिका से लेकर कक्षा 3 तक की सभी कक्षाओं के लिए अलग–अलग लक्ष्य सूची दी गई है, जो शिक्षकों को एक मानक प्रदान करती है, ताकि वे मूलभूत भाषा और साक्षरता समझ के न्यूनतम स्तर को प्राप्त करने के पश्चात इसे बढ़ाने के पथ पर अग्रसर हो सकें।
- दस्तावेज में लगभग हर उस छोटी से छोटी बात पर चर्चा की गई है जिससे बुनियादी गणितीय कौशलों को बढ़ाया जा सके। दस्तावेज में कक्षावार न केवल लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, बल्कि उन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए अनेक विधियाँ व गतिविधियाँ भी बताई गई हैं जिनकी सहायता शिक्षक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में ले सकते हैं।
- मिशन में शिक्षकों के महत्व को देखते हुए इनकी क्षमता निर्माण के लिए 'निष्ठा' मॉडल का अनुकरण करते हुए शिक्षा के मूलभूत स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों को प्री–स्कूल से लेकर प्राथमिक कक्षाओं तक विशिष्ट एफ.एल.एन. पैकेज उपलब्ध कराने का प्रावधान है।
- मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिभावकों का सहयोग अपरिहार्य है। अभिभावकों को जागरूक व प्रेरित करने के लिए समय-समय पर आवश्यकतानुसार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने तथा सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए अनेक युक्तियाँ सुझाई गई हैं, ताकि वे भी सक्रिय रूप से एफ.एल.एन. को प्रभावी बनाने में भागीदार बन सकें।
- विद्यार्थियों में एफ.एल.एन. कौशलों के विकास के लिए 360° मूल्यांकन के साथ गुणात्मक व रचनात्मक मूल्यांकन की अनेक विधियों का जिक्र किया गया है।
- क्षमता आधारित अधिगम परिणामों की दिशा में बढ़ने के उद्देश्य से यह प्रावधान किया गया है कि बच्चों को अगली कक्षा में तभी भेजा जाए जब

वे अपनी कक्षा का पाठ समझकर पढ़ लेते हों तथा अपनी कक्षा के अनुरूप मूलभूत गणितीय ज्ञान रखते हों।

- स्कूल–पूर्व तैयारी के लिए बालवाटिका में भी जाने से पूर्व बच्चों को तैयार करने के लिए विशेष तरह के खेल आधारित मॉड्यूल तैयार करने का प्रावधान किया गया है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 3 माह का स्कूल तैयारी मॉड्यूल 'विद्याप्रवेश' कक्षा 1 में जाने वाले बच्चों के लिए तैयार की गई है।
- पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, लड़कियों तथा वंचित समूह के बच्चों के हितों को देखते हुए पाठ्यक्रम में कला, खेल, कथा–वाचन, आई.सी.टी., समूह-कार्य, भूमिका-निभाना, समूह में परियोजना कार्य आदि का समावेश करते हुए पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र व विद्यालयीय वातावरण को समावेशी बनाने का हर संभव प्रयास किए जाने की बात कही गई है।
- इस मिशन की खास बात यह है कि इसमें हर एक हितधारक की जिम्मेदारियों का निर्धारण बेहद स्पष्ट शब्दों में किया गया है, जो इसकी सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हो सकती है। मिशन के तहत अधिक से अधिक हितधारकों को जोड़ने का प्रयास किया गया है। मिशन का विकेंद्रीकरण केंद्र से लेकर स्कूलों तक किया गया है, जिससे इसे जमीनी स्तर तक पहुँचाने में मदद मिलेगी।
- निपुण भारत मिशन राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर और जिला स्तर पर आई.टी. की मदद से मिशन की गतिविधियों का निरंतर निगरानी करेगा तथा इस निगरानी में क्षेत्र स्तर तक प्रत्येक बच्चे की निगरानी शामिल होगी जिससे कोई भी बच्चा छूट न सके। यू-डाइस प्लस की वर्तमान विशाल डेटा संग्रह के माध्यम से एफ.एल.एन. की स्थिति की सटीक जानकारी प्राप्त होगी तथा इसके द्वारा समय-समय पर उचित कदम उठाए जा सकते हैं जिससे एफ.एल.एन. कौशलों के विकास के लक्ष्य की पूर्ति हो सकेगी। अतः निपुण भारत मिशन में निगरानी और सूचना प्रौद्योगिकी ढाँचा एक बेहतर व मजबूत स्थिति में है।
- मिशन में बुनियादी अधिगम के विभिन्न पहलुओं के क्रियान्वयन में आने वाले मुद्दों और समस्याओं से रूबरू होने के लिए राष्ट्रीय, राज्य तथा जिला स्तर पर अनुसंधान और मूल्यांकन किए जाने का प्रावधान किया गया है। निश्चित समयांतरालों पर अनुसंधान व मूल्यांकन करते रहने से मिशन में नवीन पहलुओं को समावेशित करके इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

## निष्कर्ष

- निपुण भारत एक स्वागतयोग्य एवं संभावनाओं से परिपूर्ण मिशन है जिसमें एफ.एल.एन. कौशलों के विकास के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश व विभिन्न कक्षाओं के अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण करने के साथ ही मातृभाषा में शिक्षा पर जोर दिया गया है। अधिगम मूल्यांकन के विविध तरीके, शिक्षकों के क्षमता निर्माण के लिए पहल, स्कूल-पूर्व तैयारी के लिए मॉड्यूल का विकास, समावेशी शिक्षा के लिए उचित प्रबंध, मिशन कार्यान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका का स्पष्ट निर्धारण, क्षमता आधारित अधिगम परिणामों की दिशा में बढ़ने, समय-समय पर

मिशन की निगरानी करने के साथ ही मिशन को निरंतर बेहतर बनाने के लिए अनुसंधान, मूल्यांकन व दस्तावेजीकरण का भी प्रावधान किया गया है।

- मिशन को सफल बनाने की राह में कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे— सेवारत शिक्षकों में आवश्यक न्यूनतम योग्यताओं का अभाव, असंतोषजनक शिक्षक छात्र अनुपात, आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्रियों का अभाव, शिक्षा में बजट की कमी, विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव, आँगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों पर गैर-शैक्षणिक कार्यों का अधिक भार तथा उनमें एफ.एल.एन. संबंधी ट्रेनिंग की कमी इत्यादि।

## सुझाव

निपुण भारत मिशन के संबंध में सुझाव के रूप में शोधकर्त्री की मान्यताएँ अग्रलिखित रूप में संस्थापना हेतु प्रस्तुत हैं—

- मूलभूत स्तर पर बच्चों की शिक्षा आवश्यक रूप से उनकी मातृभाषा में ही होनी चाहिए, क्योंकि बच्चे यदि एक भाषा में पकड़ बना लेंगे तो अन्य भाषाओं को भी वे आसानी से सीख सकते हैं। पुस्तकों की छपाई के दौरान द्विभाषी पद्धति को अपनाया जा सकता है, कम से कम मुख्य शब्दों व शीर्षक इत्यादि के लिए तो यह किया जाना ही चाहिए।
- शिक्षकों को भरपूर प्रयास करना चाहिए कि बच्चों को गणित का ज्ञान परंपरागत रूप से न देकर व्यवहारिक तरीके से प्रदान करें। गणित को सिर्फ एक विषय के रूप में न पढ़ाकर उनमें मूलभूत संख्याज्ञान को इस प्रकार विकसित करें कि वे गणित से डरें नहीं बल्कि रुचि लें।
- वर्तमान में शिक्षकों पर गैर–शैक्षणिक कार्यों का अतिरिक्त भार, शिक्षकों में गुणवत्ता की कमी, असंतोषजनक शिक्षक-छात्र अनुपात, आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्रियों का अभाव, शिक्षकों का स्थानांतरण इत्यादि शिक्षकों को अपनी भूमिका का सुचितापूर्ण निर्वहन करने में बाधक तत्व हैं। इन बिंदुओं पर तुरंत प्रभाव से आवश्यक कदम उठाया जाना चाहिए।
- निपुण भारत मिशन में आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी भूमिका है तथा हम सभी इस बात से भलीभाँति परिचित है कि आँगनबाड़ी मुख्य रूप से बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण तथा अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यों (चुनाव ड्यूटी, टीकाकरण, पल्स पोलियो ड्यूटी, राशन व पुष्टाहार वितरण, रजिस्टर मेंटेन करना, विभिन्न जागरूकता रैलियों का संचालन करना इत्यादि) में संलग्न रहती हैं। अतः प्रत्येक आँगनवाड़ी केंद्र पर एक अन्य प्रशिक्षित शिक्षक को नियुक्त किया जाए जिस पर कोई अन्य गैर-शैक्षणिक जिम्मेदारी न हो, उनका कार्य केवल बच्चों को पढ़ाना व खेलकूद के माध्यम से सिखाना हो। इस प्रकार नए केंद्र बनाने की भी आवश्यकता नहीं होगी, उन्हें पुराने केंद्रों में ही समावेशित कर सकते हैं जिससे संसाधन की बचत होगी और एक ही केंद्र पर स्वास्थ्य व शिक्षा दोनों की उचित व्यवस्था हो सकेगी।
- मूलभूत स्तर पर योगात्मक के बजाय गुणात्मक व रचनात्मक मूल्यांकन बेहद आवश्यक कदम

है। कक्षा में बच्चों को उनकी बुद्धि लब्धि (आई. क्यू.) के आधार पर अलग–अलग वर्गों में बाँटना ठीक नहीं होता है, लेकिन इसके उलट यदि उन्हें कुछ इस प्रकार से समूहों में बाँट दिया जाए कि हर समूह में कुछ तीव्र बुद्धि लब्धि तथा कुछ सामान्य बुद्धि लब्धि के बच्चे हों तो यह सभी बच्चों के लिए लाभदायक होगा। एक बच्चा दूसरे से सीखेगा, क्योंकि सहपाठियों से सीखने में कोई औपचारिकता, भय अथवा झिझक नहीं होती, वहीं दूसरे बच्चे के संप्रत्यय और अधिक स्पष्ट होंगे तथा उसमें नेतृत्व की क्षमता विकसित होगी। सभी बच्चों में सामाजिकता का विकास होगा, इस तरह दोनों एक दूसरे से सीखेंगे और शिक्षक का कार्य आसान हो जाएगा। ऐसा करना एफ.एल.एन. मिशन को और अधिक प्रभावी बनाएगा।

- हालाँकि, मिशन में दिए गए सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम) की लक्ष्य सूची कई शोधों के पश्चात निर्धारित की गई है, लेकिन सीखने की कोई सीमा नहीं होती। अतः दस्तावेज में दिए गए लक्ष्य सूची को अंतिम लक्ष्य न मानकर, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के पश्चात और आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए।
- आँकड़ें बताते हैं कि शिक्षा पर खर्च बहुत ही कम किया जाता रहा है। इस मिशन को लागू करने के बाद भी शिक्षा बजट में कोई खास इजाफा नहीं हुआ है। अतः मिशन को सफल बनाने के लिए शिक्षा बजट, बल्कि खासकर प्राथमिक शिक्षा का बजट बढ़ाने की आवश्यकता है।
- मिशन के विभिन्न पहलुओं के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का पता लगाने के लिए अनुसंधान करने का प्रावधान किया गया है। इन अनुसंधानों में मिशन के वास्तविक लाभार्थियों अर्थात कक्षा 1, 2 व 3 के विद्यार्थियों के अनुभव भी समावेशित किए जाने चाहिए ताकि मिशन में आने वाली वास्तविक समस्याओं का अनुमान लगाया जा सके।

## शैक्षिक निहितार्थ

समझ के साथ पढ़ने, लिखने तथा मूलभूत गणितीय कौशल भावी जीवन का आधार बनता है। उच्च गुणवत्ता वाली प्रारंभिक बचपन की शिक्षा बच्चे की दीर्घकालिक विकास और सीखने के मामले में जीवन में भारी लाभांश देती है। अतः प्रारंभिक स्तर पर एफ.एल.एन. कौशलों का विकास बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि ये केवल 'कौशल' नहीं, बल्कि 'जीवन कौशल' हैं। किसी भी नीति को लागू करने के पश्चात समय-समय पर उसकी समीक्षा करते रहने से उसे निरंतर बेहतर बनाने में मदद मिलती है। निपुण भारत मिशन के दस्तावेज का विश्लेषण करके उचित सुझाव देना इस मिशन को और भी प्रभावी बनाने में मददगार साबित होगा। यह मिशन किस सीमा तक वर्तमान की वास्तविकताओं से मेल खाता है, मिशन की संभावनाओं व चुनौतियों आदि के मूल्यांकन के लिए यह अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है।

## संदर्भ


असर. 2005. *रूरल*. असर सेंटर, सफरदरजंग रोड, नई दिल्ली.
https://img.asercentre.org/docs/Publications/ASER%20Reports/ASER_2005/aserfullreport2005.pdf

———. 2018. एनुअल स्टेट्स ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट. *रूरल 2017*. असर सेंटर, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली.
https://www.asercentre.org/p/134.html?p=61

———. 2019. एनुअल स्टेट्स ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट. *रूरल 2018*. असर सेंटर, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली.
https://img.asercentre.org/docs/ASER%202018/Release%20Material/aserreport2018.pdf

एन.आई.ई.पी.आई.डी. 2020. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020*. नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द एंपावरमेंट ऑफ पर्सन्स विद इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज. https://niepid.nic.in/nep_2020.pdf

मौर्या, आरती. 2022. *निपुण भारत मिशन : एक मूल्यांकन [अनपब्लिश्ड मास्टर्स डिजर्टेशन]*. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

यूनेस्को. 2006. मैपिंग लिटरेसी इन इंडिया : हू आर द इलिटरेट्स एंड व्हेयर डू वी फाइंड देम. *यूनेस्डॉक*.
https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000146016

———. 2021. *सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 4 एंड इट्स टारगेट्स*.
https://en.unesco.org/education2030–sdg4/targets

शिक्षा मंत्रालय. 2021. *निपुण भारत गाइडलाइंस— बुक मेजर इनिशिएटिव्स डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nipun_bharat_eng1.pdf